Hanuman Chalisa | हनुमान चालीसा

|| दोहा: ||

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि। बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।

मैं श्री गुरु महाराज के चरण कमलों की धूली से अपने मन रूपी दर्पण को पवित्र करके श्री रघुवीर के कीर्ति यश का वर्णन करता हूं, जो चारों फल अर्थात धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान वाला है।

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार। बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

हे पवन-कुमार, मैं आपको ध्यान करता हूं। आप जानते हैं कि मेरा शरीर और बुद्धि निर्बल है। कृपा कीजिये और आप मुझे शारीरिक बल, सद्बुद्धि एवं ज्ञान प्रदान कीजिये और मेरे दुखों व दोषों का नाश कर दीजिए।

|| चौपाई: ||

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।

श्री हनुमान जी की जय हो। हे प्रभु, आपका ज्ञान और गुण सागर समान अथाह है। हे कपीश, आपकी जय हो! तीनों लोकों, भूलोक, स्वर्ग लोक, और पाताल लोक में आपकी कीर्ति है।

रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।

हे श्री राम दूत अंजनीपुत्र पवनसुत, आप अतुलित बल के भंडार हैं|

महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।

हे महावीर बजरंग बली, आपका पराक्रम विशेष है| आप कुमति को दूर करते है, और निर्मल बुद्धि वालों के साथी और संगी है।

कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।

आपका स्वर्ण जैसा शरीर है, और आप सुन्दर वस्त्रों, कानों में कुण्डल और घुंघराले बालों से सुशोभित हैं।

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। कांधे मूंज जनेऊ साजै।

आप हाथों में बज्र और ध्वजा लिए हुए हैं | आपके कन्धे पर मूंज के जनेऊ सुशोभित है।

संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बन्दन।।

हे केसरी नंदन आप प्रभु शंकर जी के अवतार है, आपके यश और पराक्रम की वन्दना पूरे जगत में होती है।

विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।

आप सभी प्रकार की विद्याओं से परिपूर्ण, अत्यंत गुणवान और चतुर हैं | प्रभु श्री राम के कार्यों के हेतु आप सदा आतुर रहते हैं ।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।

आप प्रभु श्री राम जी की कथा सुनने मैं अत्यंत आनद लेते हैं| श्री राम, माता सीता और लक्षमण जी आपके ह्रदय में बसते हैं।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।

आपने अपना बहुत सूक्ष्म रूप सीता जी को दिखलाया और विकराल रूप धारण करके लंका को जलाया।

भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचंद्र के काज संवारे।।

आपने अति विशाल रूप धारण करके राक्षसों का संघार किया और प्रभु श्री रामचन्द्र जी के कार्यों को सफल किया ।

लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।

आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण जी के प्राण बचाये, हर्षित होकर श्री रघुवीर ने आपको ह्रदय से लगा लिया।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

श्री रघुपति ने आपकी बहुत प्रशंसा की और आपको अपने प्रिय भाई भरत के सामान माना ।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।

आपका यश हज़ारों मुखो से गाने योग्य है। यह कहकर श्री राम ने आपको अपने हृदय से लगा लिया।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।

श्री सनक आदि ऋषि, ब्रह्मा आदि देवता और मुनि, नारद मुनि जी, सरस्वती जी, शेषनाग जी सभी आपका गुण गान करते है।

जम कुबेर दिगपाल जहां ते। कबि कोबिद कहि सके कहां ते।।

यमराज, कुबेर, दिग्पाल, कवि, विद्वान आदि अर्थात कोई भी आपके यश का पूर्णतः वर्णन नहीं कर सकते है।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।

आपने प्रभु श्रीराम से मिलवा कर सुग्रीव जी के ऊपर उपकार किया |जिसके कारण वह राजा बने।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना।।

आपके सुझाव का विभिषण जी ने पालन किया जिससे वे लंका के राजा बने, इसको सब संसार जानता है।

जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

जो सूर्य इतने सहस्त्र योजन दूरी पर है कि उस पर पहुंचने के लिए युग लगे। उन सूर्य को आपने एक मीठा फल समझकर निगल लिया।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।।

आपने प्रभु श्री रामचन्द्र जी की अंगूठी मुंह में रखकर अथाह समुद्र को लांघ लिया, आपके लिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

इस जगत के कठिन से कठिन काम भी आपकी कृपा से सहज हो जाते है।

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

प्रभु श्री रामचन्द्र जी के द्वार के आप रखवाले है, आपके आज्ञा बिना किसी को वहां प्रवेश नहीं मिलता है।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डर ना।।

जो कोई भी आपकी शरण में आते है, उन्हें सभी आनन्द प्राप्त होता है, जब आप रक्षक है, तो फिर किसी का भी डर नहीं रहता है।

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक तें कांपै।।

आपके तेज को सिवाय आपके कोई नहीं रोक सकता, आपके हुंकार से तीनों लोक कांप जाते है।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।

जहां महावीर हनुमान जी का नाम सुनाई आ जाता है, वहां भूत, पिशाच पास भी नहीं आते है।

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।

वीर हनुमान जी! आपके नाम का निरंतर जप करने मात्र से प्राणिओ सब रोग खत्म हो जाते है और सारी पीड़ा को आप हर लेते है।

संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।

हे हनुमान जी! जो कोई भी आपका मन, कर्म और वचन से ध्यान करता है, उनको सब

संकटों से आप छुड़ाते है।

सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।

सबसे तपस्वी व श्रेष्ठ राजा श्रीराम है, उनके सभी कार्यों को आपने सहज ही कर दिया।

और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै।।

आपके पास मनोरथ ले कर आने वालो को जीवन के सभी फलों की प्राप्ति होती है

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।

आपका प्रताप चारो युगों सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग में फैला हुआ है, आपकी प्रसिद्धि से सारा जगत प्रकाशमान है।

साधु-संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।

साधु- संतों की आप रक्षा करते है, असुरों का विनाश करते है। और श्रीराम के आप दुलारे हैं॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।

आप आठ सिद्धि और नौ निधियों के दाता हैं, यह वरदान आपको जानकी माता ने दिया है।

राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।

आपके पास सारे कष्टों का नाश करने वाले राम नाम की औषधि है। आप सदा श्री रघुपति जी के सेवक बने रहें॥

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम-जनम के दुख बिसरावै।।

आपका भजन करने से भक्त श्रीराम को प्राप्त करते है और उनके जन्म जन्मांतर के दुख दूर हो जाते है।

अन्तकाल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरि-भक्त कहाई।।

आपका भक्त अंतिम काल में श्री राम धाम वैकुण्ठ को जाता है | जहां जन्म लेकर वह हरि-भक्त कहलाता है

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।

हे हनुमान जी! आपके भक्त को अन्य किसी देवता को चित में रखने की आवश्यकता नहीं रहती। आपकी सेवा से सब सुखों की प्राप्ति होती है ||

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।

जो महावीर श्रीहनुमान जी का सुमिरन करता रहता है, उसके सब संकट कट जाते है और सारी पीड़ा मिट जाती है।

जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।

हे हनुमान गोसाईं! आपकी सदा ही जय हो, जय हो, जय हो! आप मुझ पर कृपालु श्री गुरुदेव के समान कृपा कीजिए।

जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।।

जो कोई सौ बार हनुमान चालीसा का पाठ करेगा वह अपने सभी बंधनों से छूट जाएगा और उसे महा सुख की प्राप्ति होगी ।

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

जो यह हनुमान चालीसा को पढ़ता है उसको सिद्धि प्राप्त होती है, भगवान शंकर इस बात के साक्षी है ।

तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मंह डेरा।।

स्वामी श्री तुलसीदास जी कहते हैं, मैं सदा श्री हरि का चेला हूँ, हे नाथ! आप मेरे हृदय में निवास कीजिये॥

दोहा:

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।

राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

हे पवनपुत्र, संकटमोचन, मंगलमूर्ति हनुमान जी, आप देवताओं के देवता श्रीराम, सीता माता और लक्ष्मण जी सहित मेरे हृदय में निवास कीजिये॥

.....

सियावर राम चंद्र की जय | पवन सुत हनुमान की जय ||

.....

www.hanumanchalisalyric.com